Vendangam-A Multidisciplinary Journal of Higher Education: Vol. 01, No. 01, pp. 01-08, April 2022

Peer Reviewed Journal

शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के विद्यार्थियों का क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. आर. पुष्पा नामदेव एव रेखा नामदेव

* सहायक प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

**सहायक प्राध्यापक, प्रिस्म स्कूल ऑफ एजुकेशन,भिलाई

Corresponding author:pushpanamdeo@yahoo.com

Received: 12-01-2022 **Revised:** 24-03-2022 **Accepted:** 02-04-2022

सारांश

शिक्षा की गुणवत्ता पर शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षकों दोनों का सीधा प्रभाव पड़ता है। हमारे देश में अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम अनेक स्तरों पर प्रचलित है। देश भर में शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों द्वारा अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे है। अध्यापक शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों को इस हेतु तैयार किया जा रहा है कि वे विद्यालयों को वास्तविक रूप से विद्यार्थियों के लिए सीखने की संस्था बना सके। शिक्षकों की गुणवत्ता एवं उनके कार्य करने के तरीकों में बदलाव की वास्तविक ज़िम्मेदारी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों पर है। इसी तारतम्य में प्रशिक्षण संस्थानों में अध्यापकों की प्रशिक्षुता, अभ्यास शिक्षण, प्रायोगिक कार्य तथा पूरक शैक्षिक क्रियाओं पर उचित ध्यान देने हेतु राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अधिसूचना 2014 लागू की गई। जिसके तहत शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम (बी.एड. एवं एम.एड.) के अवधि को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष किया गया। जिसमें क्षेत्र प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया एवं इसकी अवधि का विस्तार कर अनेक गतिविधियों को शामिल किया गया। प्रशिक्षुओं को विभिन्न प्रकार के अनुभव द्वारा कुशल शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षक बनाने का प्रयास किया गया। क्षेत्र प्रशिक्षण के महत्व को देखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन किया गया। शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के विद्यार्थियों का क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध में भिलाई नगर के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से 60 शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के चतुर्थ सत्र के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया। क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को जानने हेतु साक्षात्कार का उपयोग कर प्राप्त प्रदत्तों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया। प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण में यह पाया गया कि अनेक विद्यार्थियों का मानना है कि क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम उनमें शिक्षण प्रक्रिया की वास्तविक समझ विकसित करता है। यह प्रशिक्षण पढ़े गए सिद्धान्त एवं प्रायोगिक ज्ञान को प्रभावी रूप से समेकित करता है एवं इसके द्वारा वे अपने शिक्षण कौशल का आलोचनात्मक चिंतन करने में सक्षम होते है। इस प्रकार प्राप्त निष्कर्षों द्वारा हम कह सकते है कि शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के विद्यार्थियों के लिए क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम उपयोगी है अतः एन.सी.टी.ई. के द्वारा इस पाठ्यक्रम में यह पहल निश्चित ही शिक्षक प्रशिक्षकों की गुणवत्ता के विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है।

मुख्य बिन्दू: शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, व्यावसायिक कौशल, शिक्षक शिक्षा संस्थान

शिक्षा की गुणवत्ता के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा की प्रभाविता सर्वत्र स्वीकार्य है। यह अनुभूत सही है कि जैसे अध्यापकों का प्रशिक्षण होगा वैसा ही कक्षा में शिक्षण होगा। इसलिए अध्यापक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। इस हेतु भारत सरकार के लिए अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता में सुधार के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के द्वारा स्थापित मानदंडों का अनुपालन किया गया एवं अध्यापक शिक्षा संस्थान इसके अनुरूप ही कार्य कर रहे है।

शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु कालांतर से ही प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय शिक्षा आयोग 1882 के अनुसार शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक विषय दोनों में पृथक रूप से उत्तीर्ण होना आवश्यक था। इस दौरान शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में विकास हेतु अनेक कार्य किए गए किन्तु यह केवल शिक्षण संस्थानों की मात्रात्मक वृद्धि तक ही सीमित रही। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) एवं माध्यमिक शिक्षा आयोग(1952-53) ने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में लचीलापन एवं स्थानीय विशेषताओं, सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक विषयों के मध्य संतुलन एवं विद्यार्थियों के मूल्यांकन की आवश्यकताओं पर बल दिया। कोठारी आयोग (1964-65) शिक्षा के सभी स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक, व्यावसायिक एवं तकनीकी) सभी स्तरों पर बल दिया। इस आयोग के द्वारा शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारी में सुधार की बात कही गई। एन.सी.टी.ई. के द्वारा 1978 में शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक शिक्षा में तथ्य आधारित विषय वस्तु, तकनीक, वार्षिक परीक्षा प्रणाली में सुधार करना था। चोटोपाध्याय कमेटी रिपोर्ट (1983-85) के अनुसार यदि शिक्षकों के कार्य एवं उत्तरदायित्व और अधिक सार्थक बनाना है तो माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का प्रशिक्षण अवधि कम से कम पाँच वर्ष की होनी चाहिए जिसे कक्षा XII के उपरांत प्रारंभ होनी चाहिए। इस कमेटी के अनुसार सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण होना आवश्यक है। साथ ही साथ चार वर्षीय एकीकृत प्राथमिक एवं माध्यमिक सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की अनुसंशा करते हुए यह भी सुझाव दिया कि जहाँ तक हो सके वर्तमान में संचालित विज्ञान एवं कला महाविद्यालयों में अन्य विषयों के साथ शिक्षा विभाग की स्थापना की जानी चाहिए ताकि साथ ही साथ विद्यार्थी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का चयन कर सके।

एन.सी.एफ-2005 के अनुसार शिक्षक शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए जो स्कूलों की उभरती मांगो के प्रति संवेदनशील हो। शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षकों के व्यावसायिक विकास एवं स्कूली गतिविधियों में बदलावों हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके अनुसार शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में ऐसे तत्व शामिल हो जो छात्राध्यापकों में सीखने की प्रक्रिया की समझ और उसके लिए अनुकूल परिस्थिति विकसित कर सके। सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में विद्यार्थियों को समझ सके। शिक्षक प्रशिक्षण के अवयवों का आधार विस्तृत होना चाहिए अर्थात सैद्धांतिक विचारों का उल्लेख मात्र नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यवहार एवं सिद्धान्त में समन्वयन होना चाहिए। शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों, समकालीन भारतीय समाज के मुद्दों एवं चिताओ के लिए स्थान होना चाहिए। विद्यालयीन मूल्यांकन प्रक्रिया में केवल मात्रात्मक ही नहीं अपितु गुणात्मक

How to cite this article: Namdev, P.R, and Namdev, R (2022). Shiksha mein Snatkotar (M. Ed) ke Vidyarthiyon ka kshetra parikshan ke prati abhivriti ka adhyayan. *Vedāṅgam-A Multidisciplinary Journal of Higher Education,* **01**(01): 39-41.

Source of Support: None; **Conflict of Interest:** None

अवयवों हेतु शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण देना चाहिए।

एन.सी.एफ.टी.ई-2009 के अनुसार शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम मानवतावादी एवं चिंतनशील शिक्षक के निर्माण हेतु सक्षम होने चाहिए जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो। सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा के मुख्य तीन पाठ्यचर्या क्षेत्र की पहचान की गई है-

1. **शिक्षा का आधार** - अधिगमकर्ता का अध्ययन, समकालीन अध्ययन एवं शैक्षिक अध्ययन
2. **पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र -** पाठ्यचर्या अध्ययन एवं शिक्षण शास्त्रीय अध्ययन
3. **विद्यालय प्रशिक्षण -** व्यावसायिक क्षमता, संवेदनशीलता एवं कौशलों के विकास हेतु

एन.सी.एफ.टी.ई-2009 के अनुसार ज्ञान का निर्माण सक्रिय रूप से अधिगम के दौरान होता है अतः शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान सैद्धांतिक विषयों को क्षेत्र अनुभव के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इसके मुख्य अनुशंसाओं के अंतर्गत पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर में शिक्षण हेतु पृथक शिक्षक शिक्षण होने चाहिए। इस रूपरेखा में शिक्षक शिक्षण कार्यक्रम की अवधि में विस्तार की बात भी कही गई जिसमें क्षेत्र प्रशिक्षण अनुभव को अधिक समय देने की अनुशंसा की गई है।

वर्तमान में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम एन.सी.टी.ई. अधिनियम 2014 के द्वारा स्थापित मानदंड के अनुसार संचालित किए जा रहे है। यदि इस अधिनियम का ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया जाये तो यह इससे पूर्व चल रहे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम से अनेक रूप में भिन्न है। जैसे यदि हम इन कार्यक्रम की अवधि पर प्रकाश डालते है तो पूर्व में बी.एड. तथा एम.एड. कार्यक्रम एक वर्षीय था परंतु वर्तमान में यह द्वि-वर्षीय कार्यक्रम है। इसके साथ ही दोनों पाठ्यक्रमों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम कि अवधि में भी वृद्धि कि गई है। एन.सी.टी.ई. अधिनियम 2014 के अनुसार एम.एड. कार्यक्रम की पाठ्यचर्या में निम्नलिखित घटक सम्मिलित किए गए है -

1) कोर पाठ्यक्रम जिसमें परिप्रेक्ष्य पाठ्यक्रम, टूल पाठ्यक्रम, शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम तथा एक आत्म-विकास अवयव शामिल किया गया है।
2) विशेषज्ञता शाखाएं जहां विद्यार्थी विद्यालयी स्तरों/क्षेत्रों (जैसे प्रारंभिक या माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक) में से किसी एक का चयन किया जाएगा।
3) लघु शोध प्रबंध के लिए शोध
4) क्षेत्रीय कार्य/प्रशिक्षुता - जिसमें स्थानबद्ध प्रशिक्षण एवं संबद्धता शामिल है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को क्षेत्र आधारित परिस्थितियों में जना है। इसके लिए विद्यार्थियों को व्यवस्थित रूप से शैक्षिक स्थलों/क्षेत्रों में चार सप्ताह के लिए जोड़ा जाएगा।

एन.सी.टी.ई. के द्वारा सुझाए गए क्षेत्र निम्नलिखित है -

- व्यावसायिक सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम।
- ऐसे संगठन जो नवीन पाठ्यचर्या एवं शिक्षा पद्धति के विकास में संलग्न हो।
- पाठ्यचर्या निर्माण, पाठ्य पुस्तक विकास, शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन से जुड़े संस्थानों में संलग्नता।

क्षेत्र प्रशिक्षण कार्य का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में व्यावसायिक कौशल एवं अभिवृत्ति का विकास, शिक्षण व्यवसाय हेतु अनुभव का विकास, कार्य की प्रकृति एवं स्तर की समझ एवं मानव संसाधनों के मध्य उद्देश्यपूर्ण संबंध स्थापित करना है।

चवन एवं खंडागले(2017) छात्र शिक्षक प्रशिक्षकों के द्वारा एम.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति प्रत्येक्षीकरण का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के एम.एड.के विद्यार्थियों को लिया गया। प्रश्नावली एवं अर्ध संरचित साक्षात्कार के माध्यम से प्रदतों का संकलन किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि सभी छात्र शिक्षक प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया एवं अनेक प्रकार के अनुभव अर्जित किया। अधिकांश छात्र शिक्षक प्रशिक्षकों को कक्षा प्रबंधन में, शिक्षण में नवाचार के लिए सीमित समय एवं शिक्षक शिक्षा संस्थान से विद्यालय की दूरी चुनौतियों के रूप में आई।

नटराजन (2016) ने द्वि-वर्षीय बी. एड. कार्यक्रम एवं उनके भविष्य के प्रति छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया, जिसमें कर्नाटक के हसन शहर के बी.एड. महाविद्यालयों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। अध्ययन में अधिकांश छात्र अध्यापकों का मानना था कि द्वि-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम सही नहीं है परंतु उनका यह भी मानना था कि इस कार्यक्रम से छात्राध्यापकों की गुणवत्ता में सुधार होगा एवं भविष्य में व्यावसायिक सुरक्षा हेतु आशान्वित रहेंगे ।

चक्रवर्ती एवं बेहरा (2018) ने महिला छात्राध्यापकों का बुरदवान विश्वविद्यालय के बी. एड. पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया एवं निष्कर्ष के रूप में यह प्राप्त हुआ की सरकारी एवं गैर सरकारी महिला छात्राध्यापकों के बी. एड. पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

सुधा (2017) ने द्वि वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति छात्राध्यापकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में छः बी.एड. महाविद्यालयों का चयन किया गया। अभिवृत्ति मापनी का उपयोग कर प्रदत्तों का संकलन किया गया। प्रदत्तों का मात्रात्मक विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि छात्राध्यापकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की द्वि वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई संबंध नहीं है।

कुमार (2017) ने लिंग, विषय एवं अकादमिक योग्यता के आधार पर छात्राध्यापकों की बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण को शामिल किए जाने के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। प्रदत्तों का संकलन कठुआ जिले के 80 छात्राध्यापकों से किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु ANOVA का उपयोग किया गया। निष्कर्ष में महिला एवं पुरुष छात्राध्यापकों के अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। विषय एवं अकादमिक योग्यता, छात्राध्यापकों के बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं डालते।

गुप्ता (2019) ने बी. एड. पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण एवं सत्रीय कार्य के प्रति छात्राध्यापकों के प्रत्यक्षीकरण एवं अनुभव पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में एम.आई.ई.आर शिक्षा महाविद्यालय, जम्मू के छात्राध्यापकों को शामिल किया गया। प्रदत्तों का संकलन खुले प्रश्नावली एवं अर्ध संरचित साक्षात्कार द्वारा किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि प्रशिक्षण छात्राध्यापकों को वास्तविक अनुभव का अवसर प्रदान करता है। छात्राध्यापकों के द्वारा यह भी बताया गया की क्षेत्र प्रशिक्षण के दौरान पर्यवेक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी जिससे उनके शिक्षण कौशल में काफी सुधार आया।

शोध अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन बी.एड. एवं एम.एड. के विद्यार्थियों में किए गए एवं प्राप्त अधिकांश अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षक एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गई है।

शोध का औचित्य

किसी भी पाठ्यक्रम की सफलता उस पाठ्यक्रम के द्वारा लाभान्वित विद्यार्थियों की दक्षता पर निर्भर करती है। इस आशय के साथ शिक्षा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को क्रिया आधारित अधिगम कार्यक्रम के रूप में विकसित कर उसमें क्षेत्र प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान देने की बात कही गई। अतः एन.सी.टी.ई. अशिनियम 2014 में शिक्षा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम को विशेष रूप से महत्व दिया गया है। क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों को वास्तविक अनुभव के द्वारा एक प्रशिक्षित शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में दक्ष एवं कुशल बनाते है। इस कार्यक्रम के दौरान निर्देशित पर्यवेक्षण के द्वारा वास्तविक अनुभव दिया जाता है। क्षेत्र प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों को नियंत्रित अनुभव के साथ औपचारिक परिवेश में अन्तः क्रिया करने का अवसर प्रदान किया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में उन दक्षताओं का विकास करना है, जिनका उपयोग वे वास्तविक परिस्थितियों में कर सके। क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम में विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे एक प्रशिक्षु के रूप में प्रशिक्षण के द्वारा प्राप्त ज्ञान एवं अनुभव का उन्नयन कर शैक्षिक संस्थानों में अर्जित कौशलों का उपयोग करें। अतः वर्तमान शोध में क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व को देखते हुए शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों की क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

एम.एड. पाठ्यचर्या में क्षेत्र प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य भावी अध्यापक शिक्षको को शैक्षिक गतिविधियों में जीवंत अनुभव का अवसर प्रदान करना है। इस प्रशिक्षण का मूलाधार, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के सेवा पूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षु अध्यापकों को विद्यालय के विभिन्न पद्धितियों एवं शैक्षिक हस्तांतरण के विधियों से परिचित कराना हैं। इसके द्वारा भावी विद्यार्थियों में शैक्षिक दक्षता का विकास, शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्रत्येक अनुभव के द्वारा कराया जाता है। क्षेत्र प्रशिक्षण के दौरान महाविद्यालयों में मुख्यतः निम्न गतिविधियों को शामिल किया जाता है -

1. शिक्षक शिक्षा संस्थान के वातावरण एवं गतिविधियों का अवलोकन साथ ही शिक्षक प्रशिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी से अंतः क्रिया एवं उनके कार्य प्रणाली पर चर्चा।
2. शिक्षक शिक्षा संस्थान में छात्राध्याक का पर्यवेक्षण एवं प्रतिपुष्टि।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के वातावरण एवं गतिविधियों का अवलोकन एवं विद्यालयों के शिक्षक व विद्यालय प्रबंधन प्रमुख से कक्षा प्रबंधन, शिक्षण एवं उनके कार्य दायित्वों पर चर्चा।

अभिवृत्ति मनुष्य की वह सामान्य प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा वस्तु का मनोवैज्ञानिक ज्ञान होता है। इसी आधार पर वह व्यक्ति, वस्तुओं, स्थिति एवं प्रक्रिया का मूल्यांकन करता है। इसका संबंध व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से होता है जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थानों, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है। अभिवृत्तियों का निर्माण व्यक्ति के द्वारा विगत में विभिन्न परिस्थितियों में अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के फल स्वरूप होता है। प्रस्तुत शोध में शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों की क्षेत्र प्रशिक्षण के विभिन्न आयामों के प्रति उनकी अभिवृत्ति के विषय में जाना गया।

शोध प्रश्न

- क्या शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों में क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है ?
- क्षेत्र प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों में किस प्रकार की दक्षता का विकास होता है ?

शोध उद्देश्य

- शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के विद्यार्थियों का क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना था।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यायदर्श

प्रस्तुत शोध में भिलाई नगर के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से 60 शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के चतुर्थ सत्र के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को जानने हेतु शोधकर्ता द्वारा साक्षात्कार का उपयोग किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु अर्ध संरचित साक्षात्कार का उपयोग किया गया है। जिसमें क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कराये जाने वाले गतिविधियों के विषयों में प्रश्नों का निर्माण कर साक्षात्कार लिया गया।

अर्ध संरचित साक्षात्कार अनुसूची में मुख्यतः तीन आयाम रखे गए जिनके अंतर्गत विभिन्न प्रश्नों का निर्माण किया गया ।

1. शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की गतिविधियों का अवलोकन।
2. शिक्षक शिक्षा संस्थान में छात्राध्यापकों का पर्यवेक्षण एवं प्रतिपुष्टि।
3. शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक एवं विद्यालय प्रबंधन व प्रमुख से अंतः क्रिया एवं अवलोकन प्रदत्त विश्लेषण हेतु प्रविधि

वर्तमान शोध अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक प्रविधियों का उपयोग किया गया। जिसमें प्राप्त प्रदत्तों का प्रतिशत विश्लेषण किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचना

शोध के उद्देश्य शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के विद्यार्थियों का क्षेत्र प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। विद्यार्थियों से क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर उनकी अभिवृत्ति ज्ञात कर प्रदत्तों का संकलन किया गया जिसे निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

1. शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की गतिविधियों का अवलोकन

शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की गतिविधियों का अवलोकन के दौरान विद्यार्थियों में होने वाले अधिगम के विषय में विद्यार्थियों ने निम्न प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की। विद्यार्थियों के द्वारा साक्षात्कार के दौरान प्राप्त प्रदत्तों का सारणीयन निन्म प्रकार से किया गया -

सारणी -1: शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की गतिविधियों का अवलोकन

क्र.	गतिविधि	विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ	प्रतिशत
1.	कक्षा शिक्षण एवं सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास का अवलोकन	इसके द्वारा कक्षा शिक्षण की सूक्ष्म अव्ययों का पुनरावृत्ति होती है।	40
		सूक्ष्म शिक्षण के आयामों का बारीकी से अध्ययन करते है।	30
		कक्षा शिक्षण का अवलोकन करना सीखते है।	10
		इसके द्वारा हम कुशल शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में तैयार होते है।	20
2.	पाठ एवं इकाई योजना एवं आदर्श पाठ प्रस्तुतिकरण	पाठ एवं इकाई योजना निर्माण की पुनरावृत्ति होती है।	50
		आदर्श पाठ्य प्रस्तुतिकरण हेतु दिशा निर्देश के द्वारा प्रशिक्षण को मजबूत आधार प्राप्त होता है।	20
		पाठ एवं इकाई योजना एवं आदर्श पाठ प्रस्तुतिकरण के मूल्यांकन बिन्दुओं को समझते है।	30
3.	सह पाठ्यचर्या गतिविधियों एवं सामुदायिक कार्य का आयोजन	सह पाठ्यचर्या गतिविधियों का आयोजन संबंधी व्यवस्था करना सीखते है।	60
		सामुदायिक कार्यक्रम के द्वारा समुदाय की आवश्यकताओं को समझते है।	25
		इन गतिविधियों के आयोजन के दौरान समूह समायोजन में आने वाले कठिनाईयों के विषय में अवगत होते है।	15
4.	व्यष्टि अध्ययन	किसी भी संस्था के विषय में समझने में सहायक होती है।	55
		व्यष्टि अध्ययन, रिपोर्ट निर्माण, अधिगम एवं पुनरावृत्ति में सहायक होती है।	45

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की गतिविधियों के अवलोकन से विद्यार्थियों, में शिक्षा में स्नातक के दौरान सीखे गए सभी गतिविधियों कि पुनरावृत्ति होती है। इसके द्वारा वे एक शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में गतिविधियों का मूल्यांकन करना सीखते है। अतः अधिकांश विद्यार्थियों का यह मानना है कि क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि में वृद्धि से कई गतिविधियों को उन्हें विस्तारपूर्वक सीखने का यथोचित समय मिला है। इसका कारण यह है कि शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों को नियोजित प्रक्रिया के द्वारा क्षेत्र प्रशिक्षण में संलग्न किया गया है। चवाहन एवं खंडागले के द्वारा किए गए अध्ययन में भी छात्र शिक्षक प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया एवं अनेक प्रकार के अनुभव अर्जित किया। चवाहन एवं खंडागले (2017) छात्र शिक्षक प्रशिक्षकों के द्वारा एम.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति प्रत्येक्षीकरण का अध्ययन किया एवं यह पाया गया की सभी छात्र शिक्षक प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया एवं अनेक प्रकार के अनुभव अर्जित किया ।

2. शिक्षक शिक्षा संस्थान में छात्राध्यापकों का पर्यवेक्षण एवं प्रतिपुष्टि

शिक्षक शिक्षा संस्थान में छात्राध्यापकों का पर्यवेक्षण एवं प्रतिपुष्टि के प्रति अभिवृत्ति पर विद्यार्थियों के द्वारा साक्षात्कार के दौरान प्राप्त प्रदत्तों का सारणीयन निम्न प्रकार से किया गया -

सारणी-2: शिक्षक शिक्षा संस्थान में छात्राध्यापकों की सहायता एवं निरिक्षण

क्र.	गतिविधि	विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ	प्रतिशत
1.	पाठ योजना एवं इकाई योजना तैयार करना	पाठ योजना एवं इकाई योजना का मूल्यांकन एवं निरीक्षण करने की समझ विकसित होती है।	60
		ऐसे बहुत से आयाम जो शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रम के दौरान विस्तारपूर्वक समझ नहीं पाते है उसका मौका यहाँ मिलता है।	30
		पाठ योजना एवं इकाई योजना पर उचित प्रतिपुष्टी देने की समझ का विकास होता है।	10
2.	शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण	विषय वस्तु के अनुरूप शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण एवं उपयोगिता का मूल्यांकन करने में सहायक है।	50
		आईसीटी एकीकृत शिक्षण और मूल्यांकन प्रणाली के उपयोग को समझने एवं मूल्यांकन करना में सक्षम होते है।	30
		शिक्षक प्रशिक्षक मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं की समझ विकसित होती है।	20
3.	संगोष्ठी एवं प्रस्तुतिकरण	संगोष्ठी एवं प्रस्तुतिकरण के द्वारा स्वयं में विश्वास विकसित होती है।	40
		शिक्षक शिक्षा की कक्षाओं का संचालन एवं उपयुक्त विषय वस्तु का चयन करना सीखते है।	35
		संगोष्ठी एवं प्रस्तुतिकरण के मूल्यांकन के विभिन्न आयामों को समझते है।	25
4.	चिंतनशील दैनिकी	इसके द्वारा आलोचनात्मक चिंतन करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।	60
		एक शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में चिंतनशील दैनिकी का मूल्यांकन करना सीखते है।	40

उपरोक्त सारणी से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों को क्षेत्र प्रशिक्षण, कुशल शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में तैयार करने साथ ही क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों में शिक्षक प्रशिक्षक के कौशल विकास करने में सहायक है। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अपने दायित्व का निर्वहन करने में सक्षम होते है। इसका कारण यह है कि इन विद्यार्थियों को अनिवार्यतः शिक्षक शिक्षा संस्थान में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सहायता एवं निरीक्षण में संलग्न किया जाता है। चयनित न्यादर्श में कई विद्यार्थियों ने एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के उपरांत द्वि वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम में नामांकन कराया है, जिन्हें इस क्षेत्र प्रशिक्षण में अनेक अनुभव प्राप्त हुए जिनसे वे एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में वंचित रह गए थे। अतः शिक्षक शिक्षा संस्थान में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सहायता एवं निरीक्षण के दौरान उन्हें अनेक नवीन अनुभव हुए।

3. शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक एवं विद्यालय प्रबंधन व प्रमुख से अंतःक्रिया एवं अवलोकन

क्षेत्र प्रशिक्षण के इस भाग में विद्यार्थियों का मानना है कि शिक्षा संस्थान के विभिन्न शिक्षकों, प्रशिक्षकों, संस्था प्रमुख एवं प्रबंधन से अंतःक्रिया के द्वारा यह सीखते है कि विद्यालय एवं शिक्षक शिक्षण संस्थान के लिए आवश्यक तत्व कौन-कौन से है। वे साक्षात्कार लेने में सक्षम होते है। इस साक्षात्कार के द्वारा वे संस्था के कार्य शैली से परिचित होते है जो उन्हें भविष्य में शैक्षिक संस्थाओं में सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होते है। कई विद्यार्थियों का मानना था कि यह अंतःक्रिया उनके शोध समस्या चयन में भी सहायक होते है। विद्यार्थी इस दौरान शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कक्षा शिक्षण का भी कार्य करते है। जिसके कारण उनकी शिक्षण कौशल का विकास होता है। वे छात्राध्यापकों के कक्षाओं का अवलोकन कर शिक्षण प्रक्रिया को समझने का प्रयास करते। अतः वे क्षेत्र प्रशिक्षण के द्वारा लाभान्वित होते है।

इस प्रकार प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण उपरांत यह ज्ञात होता है कि शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों में क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है। साथ ही क्षेत्र प्रशिक्षण के दौरान उनमें कुशल शिक्षक प्रशिक्षक की अधिकांश दक्षताएँ विकसित होती है। जिससे वे भविष्य में एक सफल शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में स्वयं को स्थापित कर सकते है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोध की प्रासंगिकता एवं महत्व उस शोध के शैक्षिक निहितार्थ पर आधारित होता है। शिक्षा में स्नातकोत्तर में क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं इसके लक्ष्य की विवेचना के द्वारा वर्तमान अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्न है –

शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए

प्रस्तुत शोध के द्वारा विद्यार्थियों का क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति को ज्ञात कर इसमें सुधार किया जा सकता है। क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत गतिविधियों के आयोजन एवं प्रशासन में आने वाली चुनौतियों एवं उनके सफल क्रियान्वयन हेतु अन्तःदृष्टि का विकास कर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को एक नई दिशा प्रदान की जा सकती है। प्रस्तुत शोध के द्वारा क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों का शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी एवं विद्यालय प्रबंधन प्रमुख से अंतःक्रिया की प्रकृति ज्ञात कर उनमें सम्प्रेषण कौशल का विकास किया जा सकेगा। शोध के द्वारा यह भी ज्ञात होगा कि क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम में किस प्रकार की गतिविधियों को शामिल किया जाये ताकि इस कार्यक्रम को प्रभावी बनाया जा सके।

नीति निर्माताओं एवं प्रशासकों के लिए

एन. सी. टी. ई. द्वारा 2014 में शिक्षा में स्नातकोत्तर कार्यक्रम लागू किए गए। प्रस्तुत शोध के द्वारा क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम की वर्तमान स्थिति का आकलन हो सकेगा एवं कार्यक्रम में सुधार की आवश्यकताओं को पहचान कर उचित निर्णयों द्वारा इसकी गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। साथ ही साथ क्षेत्र अनुभव कार्यक्रम के तहत और किन अवयवों को शामिल किया जा सकता है इस पर भी नीति निर्माताओं एवं प्रशासकों का ध्यानाकर्षण किया जा सकता है।

निष्कर्ष

शोध प्रदत्तों के विश्लेषण उपरांत यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षा में स्नातकोत्तर के विद्यार्थी का मानना कि क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम उनमें शिक्षण प्रक्रिया की वास्तविक समझ विकसित करती है। यह प्रशिक्षण के दौरान पढ़े गए सिद्धान्त एवं प्रायोगिक ज्ञान को प्रभावी रूप से समेकित करता है एवं इसके द्वारा वे अपने शिक्षण कौशल का आलोचनात्मक चिंतन करने में सक्षम होते है। क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षकों की जिम्मेदारियों को समझने में सहायक होती है। यह प्रशिक्षण छात्राध्यापकों से अन्तः क्रिया करने का अवसर प्रदान करती है। साथ ही साथ समय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन, सामूहिक गतिविधियों का आयोजन, वृत्तिक क्षमता का विकास, अनुभव एवं कौशल विकास में सहायक होती है। इस प्रकार प्राप्त निष्कर्षों द्वारा हम कह सकते है कि शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के विद्यार्थियों का क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है अतः एन.सी.टी.ई. के द्वारा इस पाठ्यक्रम में यह पहल निश्चित ही शिक्षक प्रशिक्षकों की गुणवत्ता के विकास में सहायक है।

संदर्भ ग्रंथ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2006). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली.

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (2009). शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली.

चक्रवर्ती एवं बेहरा (2014).एटीट्यूड ऑफ फीमले टिचर्स- ट्रेनीज़ टूवर्ड्स द एक्जिस्टिंग बी.एड.सिलेबस ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बुरद्वान: एन एम्पिरिकल स्टडी, अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 2(12A), 31-36 doi:10.12691/education-2-12A-5

एन.सी.टी.ई. (2009). नेशनल करिकुलम फ्रेमवक्र फॉर टीचर एजुकेशन—टु वर्डस प्रिपेयरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमेन टीचर्स. नेशनल काउंसिल फ़ॉर टीचर एजकेशुन, नई दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. (2014). रेकोग्निशन नॉर्मस एडं प्रोसिजर्स - रेग्यूलेयूशन 2014. नेशनल काउंसिल फ़ॉर टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली.

मानव विकास संसाधन मंत्रलाय(1952-53). रिपोर्ट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन कमिशन. भारत सरकार, नई दिल्ली.

मानव विकास संसाधन मंत्रलाय (1964-66). रिपोर्ट ऑफ द एजुकेशन कमिशन:एजुकेशन एंड नेशनल डेव्लपमेंट. भारत सरकार, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय.(1983). रिपोर्ट ऑफ द नेशनल कमिशन ऑन टीचर-1, द टीचर एंड सोसाइटी, चोटोपाध्याय कमेटी रिपोर्ट. भारत सरकार, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय(1948-49). रिपोर्ट ऑफ द यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमिशन. भारत सरकार, नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद(1978). टीचर एजुकेशन कुर्रीकुलुम-अ फ्रमेवर्क. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

मानव विकास संसाधन मंत्रलाय (1986). नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन. भारत सरकार, नई दिल्ली.

चवन, आर. एवं वी.एस. खानडागले (2017). अ स्टडी ऑफ एम.एड. इंटर्नशिप प्रोग्राम परसीवड बाय स्टूडेंट टीचर एजुकेटर्स. अ पेपर फॉर यू .जी. सी. स्पोन्सर्ड टू डेज़ नेशनल सेमिनार ऑन चल्लेंजेस इन टीचर एजुकेशन एंड क्वालिटी डेव्लपमेंट. https://www. Researchgate.net/publication/315459476

गुप्ता, एस. (2019). परसेपसन एंड एक्सपेरिएंकेस ऑफ बी. एड. स्टूडेंट्स अबाउट इनटर्नशिप एंड सेसनल वर्क, एम.आई .ई.आर. जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीस, ट्रेंड्स एंड प्रकटिसेस,109-120.

कुमार, अशोक (2016).एटीट्यूड ऑफ पूयपील टिचर्स टूवर्ड्स इनटर्नशिप एज़ अ पार्ट ऑफ बी.एड. कुर्रीकुलुम इन रिलेशन टु जेंडर, स्ट्रीम एंड अकादमिक क्वालिफीकेशन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीन्यरिंग, साइन्स एंड कम्प्यूटिंग, 2017-2023.

सुधा,एस. (2017).एटीट्यूड ऑफ स्टूडेंट्स टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स टूवर्ड्स टू इयर बी.एड.कोर्स, परिपेक्ष-इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 6(1), 212-214.

https://hi.wikipedia.org/wiki/अभिवृत्ति